कुल पृष्ठ संख्या (कवर पेज सहित ) क्रम संख्या 12759

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

## वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

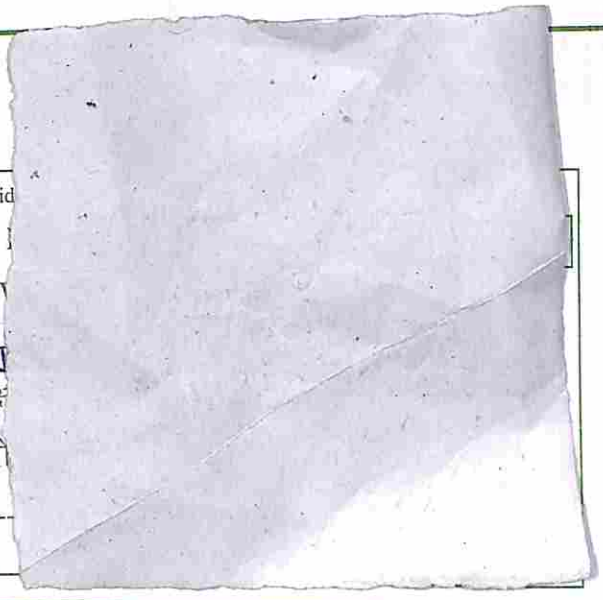

Candid
(In
(In
E
परीक्ष
शब्दो

नोट :— परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम — हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय संस्कृत वाङ्मय

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 01/04/2022

नोट :— परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :— (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

### प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

| प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक | प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| 1 | 12 | 19 | 3 |
| 2 | 5 | 20 | 3 |
| 3 | 12 | 21 | 4 |
| 4 | 2 | 22 | 4 |
| 5 | 2 | 23 | 4 |
| 6 | 2 | 24 | |
| 7 | 2 | 25 | |
| 8 | 2 | 26 | |
| 9 | 2 | 27 | |
| 10 | 2 | 28 | |
| 11 | 2 | 29 | |
| 12 | 2 | 30 | |
| 13 | 2 | 31 | |
| 14 | 2 | योग | 79 |
| 15 | 2 | प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff) | |
| 16 | 2 | अंकों में | शब्दों में |
| 17 | 3 | 79 | उन्यासी |
| 18 | 3 | | |

परीक्षक के हस्ताक्षर ________ संकेतांक 40136

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 166/2019

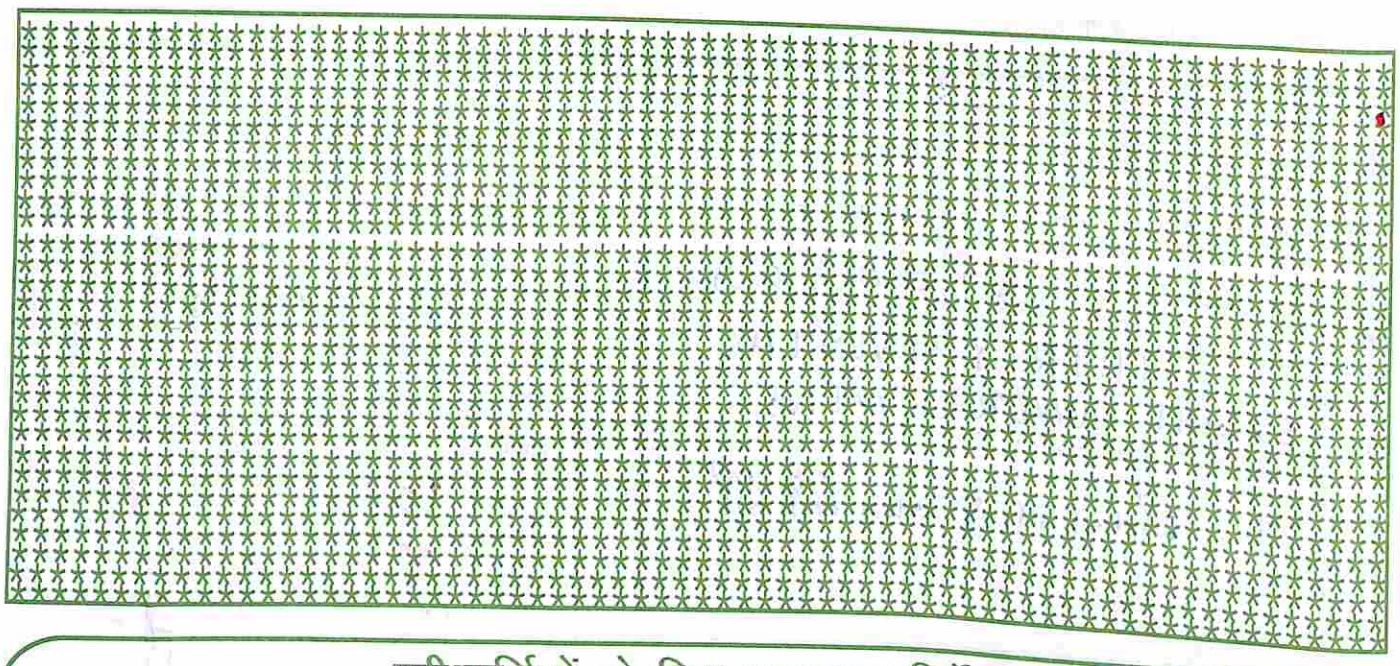

## परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न – पत्र हिन्दी – अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | (1) | |
| 1 | (i) | विद्धि सूत्रम |
| 1 | (ii) | यत्र |
| 1 | (iii) | दश |
| 1 | (iv) | धार्मिक: |
| 1 | (v) | ऐतिहासिक: |
| 1 | (vi) | अवीरा |
| 1 | (vii) | श्वश्रू: |
| 1 | (viii) | वीर: |
| 1 | (ix) | पश्च |
| 1 | (x) | गौरसिंह: |
| 1 | (xi) | श्रुतेन |
| 1 | (xii) | योगिनाम |

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | (2) | |
| 1 | (i) | ल: कर्मणि च भावे चाऽकर्मकेभ्य: । |
| 1 | (ii) | कन्याया: कनीन च । |
| 1 | (iii) | छायेव मैत्री खल सज्जनानाम् । |
| | (iv) | ~~मनुष्या मानुषा मत्या मनुजा मानवा~~ |
| | (iv) | रघुवीर |
| 1 | (v) | मनुष्या मानुषा मत्या मनुजा मानवा नरा: |
| 1 | (vi) | जनयित्री प्रसूर्माता जननी भगिनी स्वसा । |
| | (3) | |
| 1 | (i) | अण् प्रत्यय: । |
| 1 | (ii) | "अश्वपत्यादिभ्यश्च" इति सूत्रेण अण् प्रत्यय: |
| 1 | (iii) | महिषी, भगिनी । |
| 1 | (iv) | दुर्जनानां ~~स्पृहा~~ । |

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| 1 | (v) | सूत्र: → "अनद्यतने लङ्" |
| | | अर्थ: → अनद्यत भूतार्थ धातोःलङ् लकार : भवति। |
| 1 | (vi) | गायकवेषं |
| 1 | (vii) | उत्तम जना: परोपकार क्रियते विनां स्वार्थं। मध्यमजना: स्व स्वार्थं पश्यन्ति च ~~बिच~~ जना अधम जना : राक्षसप्रवृत्या : सदा गलत आचरणं क्रियते। सदा दुःखी करोति। |
| 1 | (viii) | सूर्य: |
| 1 | (ix) | चत्वार : प्रहरा : |
| 1 | (x) | आलि, वयस्या |
| 1 | (xi) | नक्षत्रम उच्यते। |
| 1 | (xii) | चतुर्विंशति |
| 2 | (4) | जलेन |
| 2 | (5) | श्रीगणेशाय नम:। नम: योगे चतुर्थी विभक्ति:। |
| 2 | (6) | उषा बालिका अस्ति। अत्र बालिका शब्द: स्त्रीलिङ्ग: |
| 2 | (7) | चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी। |

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| 2 | (8) | नव ग्रहाः सन्ति। नामानि - रविः, चन्द्रमा, मङ्गलः, बुधः, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहुः केतुः। |
| 2 | (9) | कोपना, भामिनी। |
| 2 | (10) | तनयः - पुत्रस्य नाम। अपत्यम् - सन्तानस्य नाम। |
| 2 | (11) | दुर्जनः परिहर्तव्यः। |
| 2 | (12) | "पं. अम्बिकादत्त व्यासः" शिवराजविजय लेखकः पं. अम्बिकादत्तव्यासः वर्तते। अस्य स्थिति कालः 1858 तः 1900 ई. पर्यन्तं मन्यते। एते भूषतः जयपुरराज्य निवासिन आसीत्। अस्य पितामह वाजाराम: आसीत्। यः काशी नगरं गत्वा तत्रैव निवासं कृतवान्। अस्य पितुः नाम दुर्गादत्तव्यासः। अम्बिकादत्तव्यासः बाल्यकालादेव प्रतिभासम्पन्न आसीत्। एकादशवर्षस्य अवस्थायां व्यासस्य माता दिवङ्गता। सप्तदशवर्षस्य अवस्थायां जनकः अपि दिवङ्गतः। प्रतिभासम्पन्नेन एकघटिकायां शतं श्लोकरचनाकारणादेव 'घटिकाशतक" इति उपाधिना अलङ्कृ विभूषितः। अम्बिकादत्त व्यासः शतं प्रश्नान् श्रुत्वा तेषाम् उत्तरं क्रमेण दीयते स्म। शतावधानी इति उपाधिना अपि अलङ्कृतः। |

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

कृतय:

(i) गणेशशतम्
(ii) कथाकुसुमम्
(iii) पतञ्जलिचरितम्
(iv) अवतारमीमांसाकारिका
(v) प्राकृत गूढशब्दकोश:
(vi) दु:ख द्रुमकुठार:
(vii) संस्कृताभ्यासपुस्तकम्
(viii) शिवराजविजय
(ix) सामवतं

---

(13)

सूत्र: → अनुदात्तङित आत्मनेपदम् "

सूत्रार्थ: → ~~अनुदात्त~~ ~~ङि~~ शानच् कानच् प्रत्यया: आत्मनेपद संज्ञा भवति ।

~~उदाहरणम्~~ →

---

(14) भवन्तु → भू धातो: "लोट् च" इति सूत्रेण लोट्लकार: अनुबन्धलोप [भू + ल] इति जाते "तिप् - तस् - झि - सिप् - थस् - थ - मिप् - वस् - मस् - त - आताम् - झ - थास् - आथाम् - ध्वम् - इट् - वहि - महिङ्" इति सूत्रेण झि प्रत्यय: [भू + झि] इति जाते "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इति सूत्रेण सार्वधातुकसंज्ञा "कर्तरि शप्" इति सूत्रेण शप् आगमेऽनुबन्धलोप "सार्वधातुकार्धधातुकयो:"

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

ओकारस्य गुणे ओकारः "एचोऽयवायावः" इति सूत्रेण ओकारस्य स्थाने अवादेशः [भव + झि] इति जाते "झोऽन्तः" इति सूत्रेण अन्तादेशः [भव + अन्ति] इति जाते "एरुः" इति सूत्रेण इकारस्य उकारः [भव + अन्तु] इति जाते "अतो गुणे" पररूपः भवन्तु इति रूपं सिद्धम्।

(15)

सूत्रः → "स्त्रीभ्यो ढक्"

पदच्छेदः → स्त्रीभ्यः, ढक् । द्विपदात्मकं सूत्रम्।

सूत्रार्थः → स्त्रीप्रत्ययान्तेभ्यः ढक् प्रत्ययः भवति अपत्येऽर्थे।

उदाहरणम् → वैनतेयः

वैनतेयः → विनतायाः अपत्यं इत्यर्थे विनता शब्दात् "स्त्रीभ्यो ढक्" इति सूत्रेण ढक् प्रत्यय अनुबन्धलोप "किति च" इति आदिवृद्धि, आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनां" इति ढस्य एयादेशः "यचि भम्" इति सूत्रेण भसंज्ञा "यस्येति च" आकारलोप वैनतेय प्रातिपदिकत्वात् स्वादिकार्ये [वैनतेयः] इति रूपं सिद्धम्।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

(16) दाक्षिः → दाक्षेरपत्यं पुमान् इत्यर्थे दक्ष शब्दात् "अत इञ्" इति सूत्रेण इञ् प्रत्ययः "हलन्त्यम्" इति सूत्रेण ञस्य इत्संज्ञा "तस्य लोपः" इति सूत्रेण ञस्यलोपः "तद्धितेष्वचामादेः" इति सूत्रेण आदिवृद्धिः "यचि भम्" इति सूत्रेण भसंज्ञा "यस्येति च" इति सूत्रेण भसंज्ञक अकारलोपः [दाक्षि] इति जाते "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञा "स्वौजस्मौट्" इत्यनेन सूत्रेण सु प्रथमायाः एकवचने सु प्रत्ययः "उपदेशेऽजनुनासिक इत्" इति सूत्रेण उकारस्य इत्संज्ञा "तस्य लोपः" उकारस्य लोपः "ससजुषो रुः" इति सूत्रेण सस्य स्थाने रु आदेशः अनुबन्धलोप [दाक्षि + र्] ~~खरवसाने~~ "खरवसानयोर्विसर्जनीयः" इति रेफस्य स्थाने विसर्गः [दाक्षिः] इति रूपं सिद्धम् ।

2

---

(17)

(क) शिक्षकः → शिक्षामधीते वेत्ति वा इति लौकिक विग्रह शिक्षा ~~अम~~ शब्दात् "क्रमादिभ्यो वुन्" इति सूत्रेण वुन् प्रत्ययः "हलन्त्यम्" इति सूत्रेण नस्य इत्संज्ञा "तस्य लोपः" इति सूत्रेण नलोपः "युवोरनाकौ" इति सूत्रेण वुस्थाने अकादेशः [शिक्षा + अक] "यचि भम्" इति सूत्रेण भसंज्ञा "यस्येति च" आकारस्य लोपः शिक्षक "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञा "स्वौजस्मौट्" इत्यनेन सूत्रेण प्रथमायाः एकवचने सु प्रत्ययः "उपदेशेऽजनुनासिक इत्" इति सूत्रेण उकारस्य इत्संज्ञा "तस्य लोपः" इति सूत्रेण उकारस्य लोपः "ससजुषो रुः"

1½

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

इति सूत्रेण सस्य रुआदेशः अनुबन्धलोपः
"~~खरवसानयो~~" "खरवसानयोर्विसर्जनीयः" इति
सूत्रेण रेफस्य विसर्गः शिक्षकः इति रूपं सिद्धम्।

(ग) दैत्यम् → दितेः अपत्यं इत्यर्थे दिति शब्दात्
"दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः" इति सूत्रेण
ण्य प्रत्ययेऽनुबन्धलोपः [दिति + य] इति जाते
"तद्धितेष्वचामादेः" इति सूत्रेण आदिवृद्धिः "यचि भम्"
इति सूत्रेण भंसज्ञा "यस्येति च" इति सूत्रेण
इकारलोपः [दैत्य] प्रातिपदिकत्वात् सौ, सोत्सर्गे
स्वादिकार्ये दैत्यम् इति रूपं सिद्धम्।

1½

---

(18)

(क) दाधिकम् → दध्ना संस्कृतम् इत्यर्थे दधि शब्दात्
"संस्कृतम्" इति सूत्रेण ठक् प्रत्ययः
अनुबन्धलोपः "ठस्येकः" इति सूत्रेण ठस्य इकादेशः
"किति च" इति सूत्रेण आदिवृद्धिः "यचि भम्"
इति सूत्रेण भंसज्ञा "यस्येति च" इति सूत्रेण इकारलोपः
[दाध् + इक] इति जाते दाधिक स्वादिकार्ये दाधिकम्
इति रूपं सिद्धम्।

1½

(ग) मायूरः → मयूरस्य विकारोऽवयवो वेत्यर्थे मयूर शब्दात्
"अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः" इति सूत्रेण
साहाय्येन "रजतादिभ्योऽञ्" इति सूत्रेण अञ् प्रत्ययः
अनुबन्धलोप "तद्धितेष्वचामादेः" इति सूत्रेण आदिवृद्धिः

1½

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

"यचि भम्" इति सूत्रेण भसंज्ञा "यस्येति च" भसंज्ञक अकार-लोपः [मायूर] इति जाते "कृत्तद्धितसमासाश्च" इति सूत्रेण प्रातिपदिक संज्ञा "स्वौजसमौट्. इत्यनेन सुप्रत्ययः अनुबन्धलोप ~~स्वादि~~ सस्य रुत्वे विसर्गः मायूरः इति रूपं सिद्धम्।

---

(१७)

(क) भवन्ति → भू धातोः "वर्तमाने लट्" इति सूत्रेण लट् लकारः अनुबन्धलोप ; "तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-मस्-त-आताम्-झ-थास्-आथाम्-ध्वम्-इड्-वहि-महिङ्" इति सूत्रेण प्रथमपुरुषैकवचने झि प्रत्ययः "झोऽन्तः" इति सूत्रेण सस्य अन्तादेशे "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इति सूत्रेण सार्वधातुकसंज्ञा "कर्तरि शप्" इति सूत्रेण शप् आगम "हलन्त्यम्" इति सूत्रेण पकारस्य इत्संज्ञा "तस्यलोपः" पकारस्य लोपः "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" इति सूत्रेण गुणे "एचोऽयवायावः" इति सूत्रेण अवादेशः [भव + अन्ति] इति जाते "अतो गुणे" इति सूत्रेण पररूपे भवन्ति इति रूपं सिद्धम्।

(ख) बभूव → भू धातोः "परोक्षे लिट्" इति सूत्रेण लिट् लकारः "तिप्तास्झि. इत्यनेन सूत्रेण तिप् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः "परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः" इति सूत्रेण तिप स्थाने णलादेशः अनुबन्धलोपः [भू+अ] इति जाते "भुवो वुग्लुङ्लिटोः" इति सूत्रेण वुआगमेऽनुबन्धलोप "लिटि धातोरनभ्यासस्य" इति सूत्रेण द्वित्वे भुव् भुव् अ इति जाते "पूर्वोऽभ्यासः" इति सूत्रेण अभ्याससंज्ञा "हलादिः शेषः" इति सूत्रेण अभ्याससंज्ञक वलोपः

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

"ह्रस्वः" इति सूत्रेण ~~अकारस्य~~ अक उकारः
उकारस्य
"भवतेरः" इति सूत्रेण उकारस्य अकारः [भ भुव् अ]
इति जाते "अभ्यासे चर्चः" इति सूत्रेण भस्य बते
बभूव इति रूपं सिद्धम् ।

(20)

(ख) श्लोकः → विपदि ........................ महात्मनाम् ।

प्रसङ्गः → अयं श्लोकः महाकविना भर्तृहरिणा
विरचितात् "नीतिशतकात्" उद्धृतः
अस्ति । अस्मिन् श्लोके कविः भर्तृहरिः
सज्जनस्वभावविषये कथयति ।

3

व्याख्या → विपदि = आपति । धैर्यम = धैर्य ।
अभ्युदये = सहिष्णुता । क्षमाः = समृद्धिकाले ।
सदसि = सभायाम् । वाक्य पटुता = वाक्यपटुता ।
युधि = संग्रामे । विक्रमः = पराक्रमः । यशसि =
यशसि = अभिरुचि = अभिरुचि । व्यसनं = आसक्ति
श्रुतौ = वेदाशास्त्रध्ययने । महात्मनाम् = सज्जनानाम् ।
हि = एव । प्रकृतिसिद्ध = जन्मजातः ।

भावार्थः सज्जन जनाः विपत्तिकाले धैर्य, समृद्धिकाले
क्षमा, सभायां वाक्यपटुता, संग्रामे पराक्रमः
यशन् अभिरुचि शास्त्रे आसक्ति एतद् सर्वगुणाः
सज्जनेषु जन्मजातः भवति। सज्जन विषये एक श्लोकः
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकाराय वहन्ति नद्यः, परोपकार्थमिदं शरीरम् ।।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

पदच्छेद : विपदि, धैर्यं ~~~~ अभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम: । यशसि च अभिरुचि व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ।

(21)

(क) आक्षिक: → अक्षै: दीव्यति खनति जयति जितम् इत्यर्थे आक्ष शब्दात् "प्राग्वहतेष्ठक्" इत्याधिकारात् "तेन दीव्यति खनति जयति जितम्" इति सूत्रेण ठक् प्रत्यय: अनुबन्धलोप: "किति च" इति सूत्रेण आदिवृद्धि ~~~~ "ठस्येक:" इति ठस्य इकादेश भसंज्ञा, इकारलोप [आक्ष+इक] आक्षिक प्रातिपदिकत्वात् सुप्रत्यय: अनुबन्धलोप : सस्य रुत्वे विसर्गो । आक्षिक: इति रूपं सिद्धम् ।

(घ) धुर्य: → धुरं हित इत्यर्थे धुर् शब्दात् "धुरो यड्ढकौ" इति सूत्रेण यत् प्रत्ययेऽनुबन्धलोप: "हलि च" उपधादीर्घे प्राप्ते "न भ कुर्छुराम्" इति निषेध रेफस्योर्ध्वगमने धुर्य प्रातिपदिक संज्ञा सुप्रत्यय: अनुबन्धलोप: सस्य रुत्वे विसर्ग: धुर्य: इति रूपं सिद्धम् ।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

(22)

(क) विजयपुराधीश: ------- ---- -- मन्ये।

प्रसङ्ग → अयं गद्यांश: महाकवि अम्बिकादत्तव्यासेन विरचितस्य शिवराजविजयस्य प्रथमविरामस्य द्वितीयनिःश्वासात् उद्धृत् अस्ति। अस्मिन् गद्यांशे गौरसिंहेन शिववीरं सूचनां ददाति समयस्य वर्णनम् अस्ति।

व्याख्या → गौरसिंह: वदति शिववीरं विजयपुराधीश: कथयति स्ववीरेत अफजलखानं सम्बोद्धय वीरवर! महाराष्ट्रराजेन सह योद्धुं ~~करोति~~ करिष्याति तदा त्वं शिववीरं युद्धे जेष्यासिचेत् या शिवीरं जीवित अवस्थायां बन्धि तदा अहम पदे वृद्धि च ~~वीरपुत्र~~ करिष्यामि।

पर्याय शब्दा: → युद्धे = संग्रामे। सिंहं = शिववीर: सह = साकं। अफजलखान = अफजलखान नामकस्य नर:। मा क्रम = न वर्तते। विजये = पराभवे। शिवं = शिववीरं। जितवान् = विजयवान्।

17 5

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|
| | (23) | |
| 1 | (i) | वृक्षात् पत्राणि पतन्ति । |
| 1 | (ii) | छात्राः धावन्ति । |
| 1 | (iii) | रामेन सह मोहनः अपि गृहं गच्छति । |
| 1 | (iv) | बालकेषु मोहितः श्रेष्ठः अस्ति । |

समाप्तम्

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

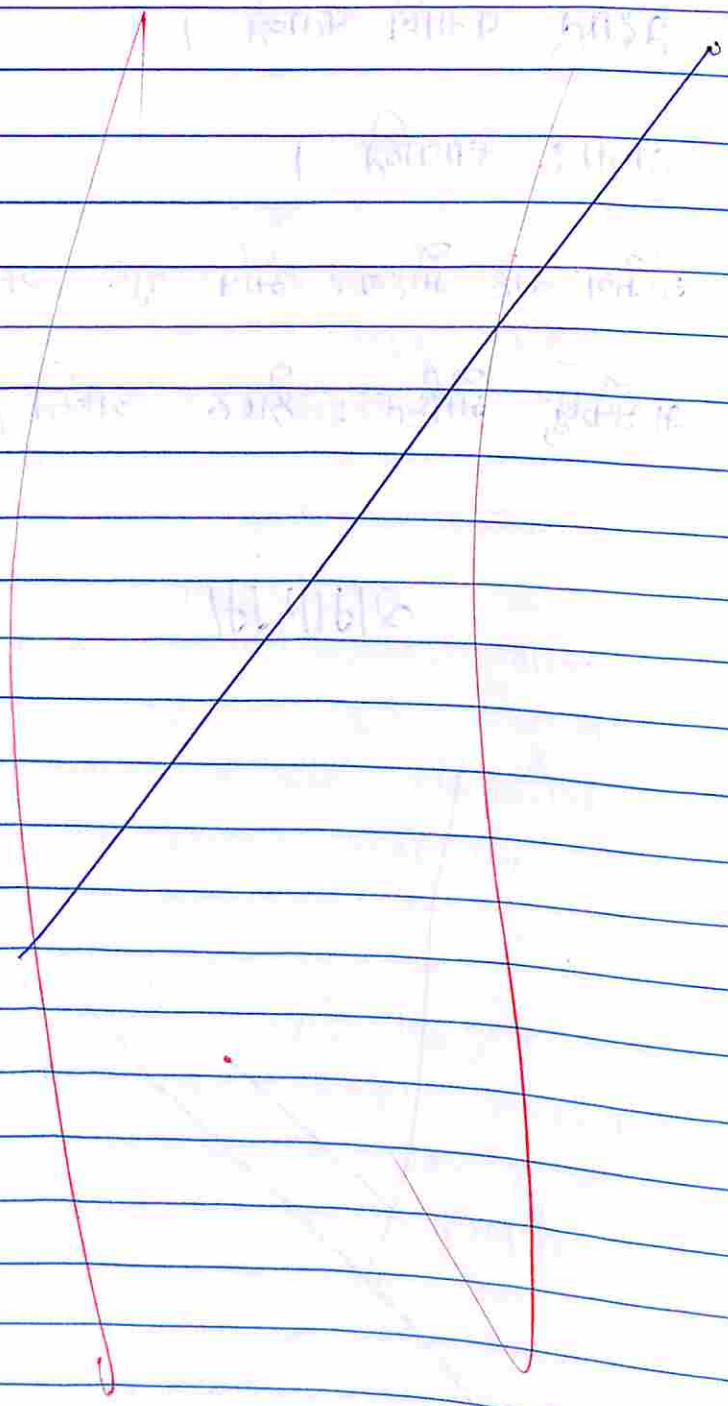

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

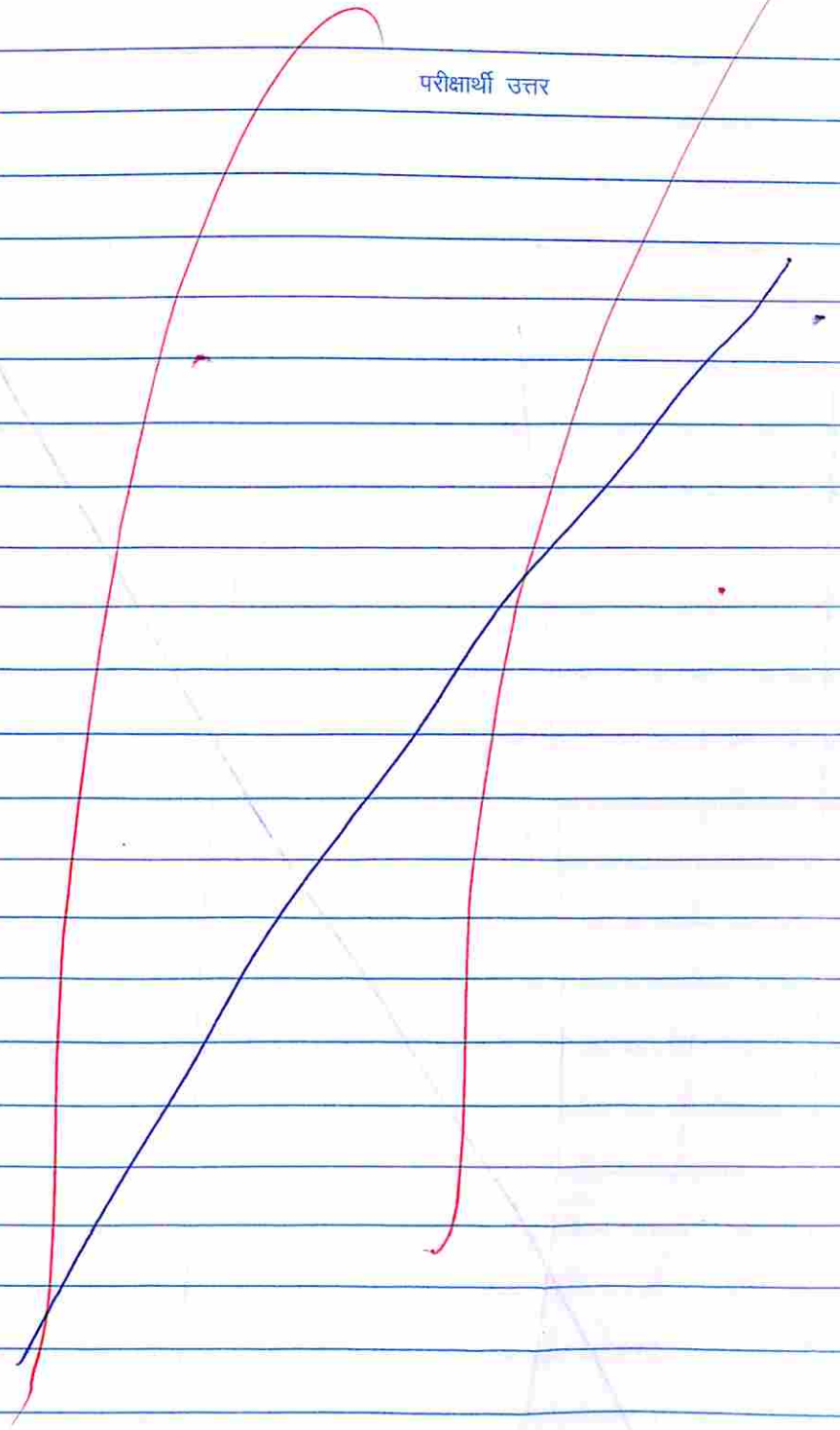

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

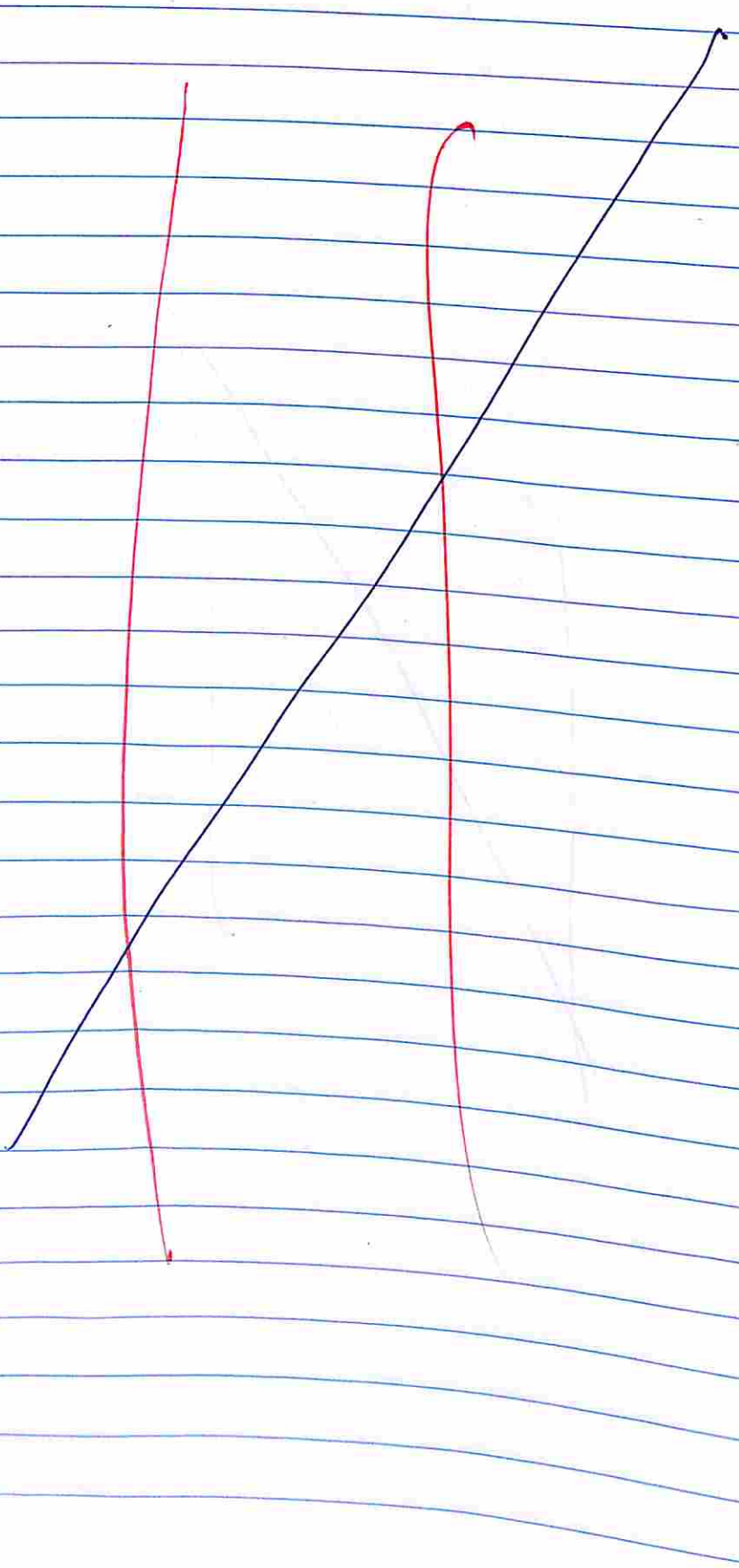

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

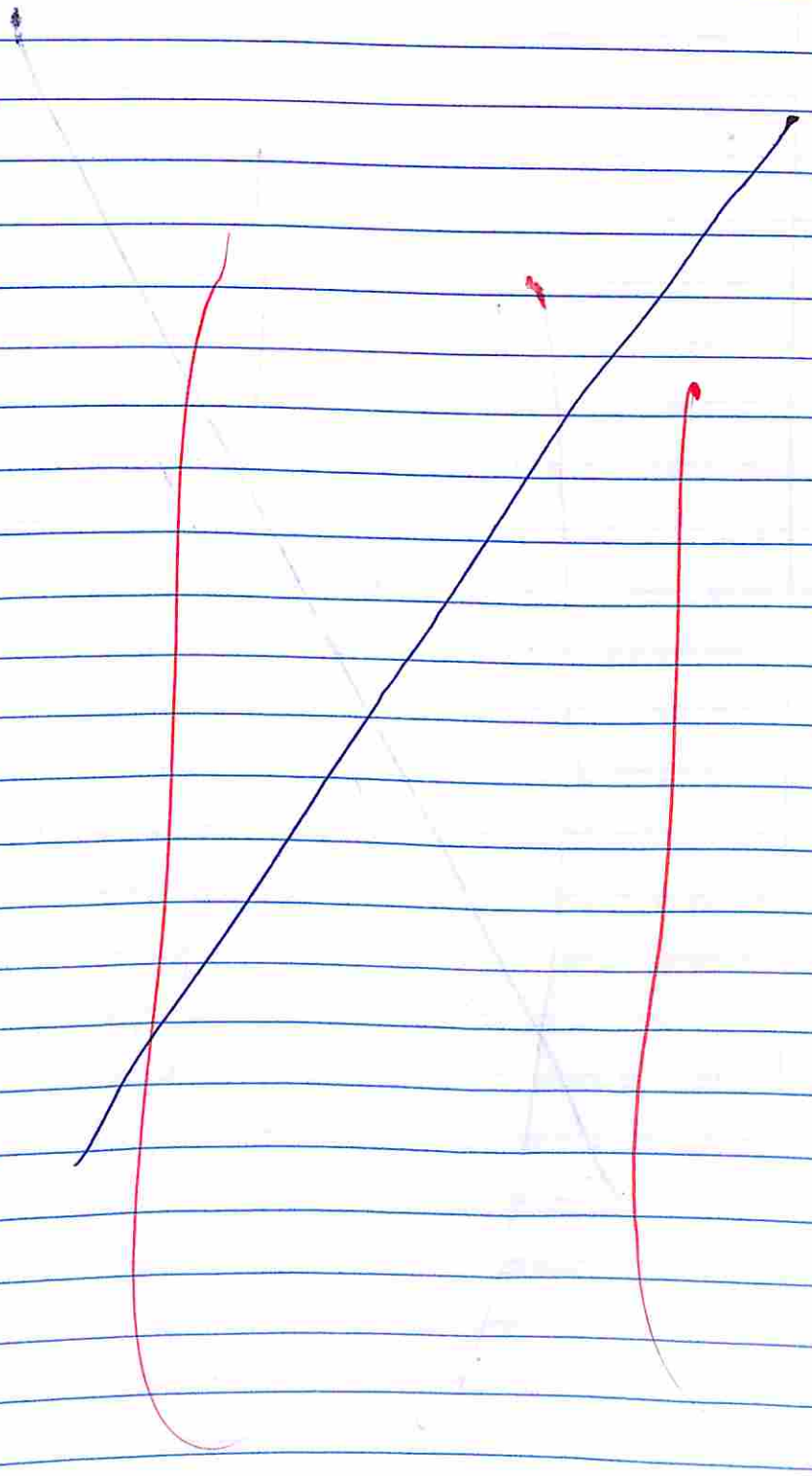

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

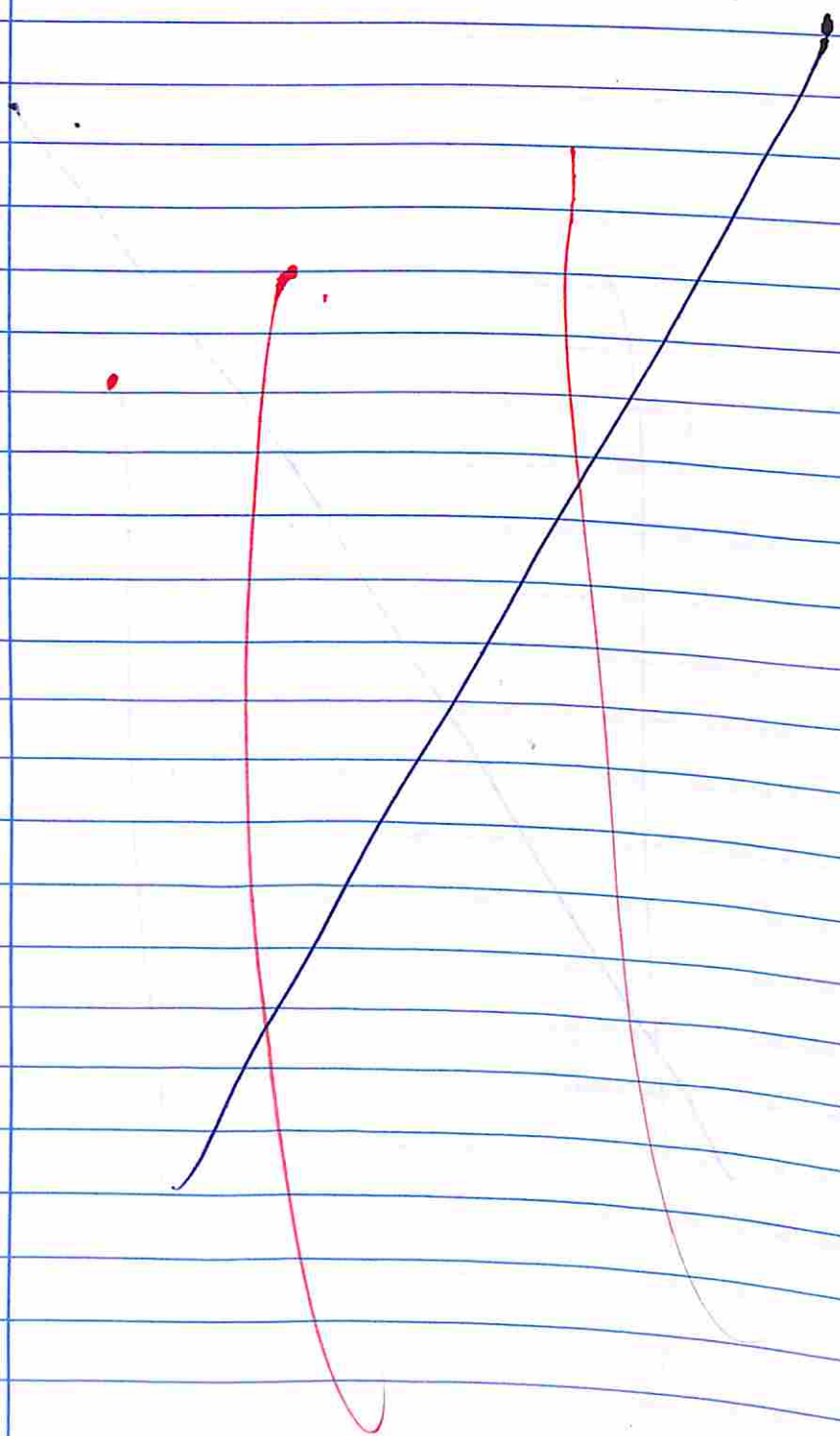

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

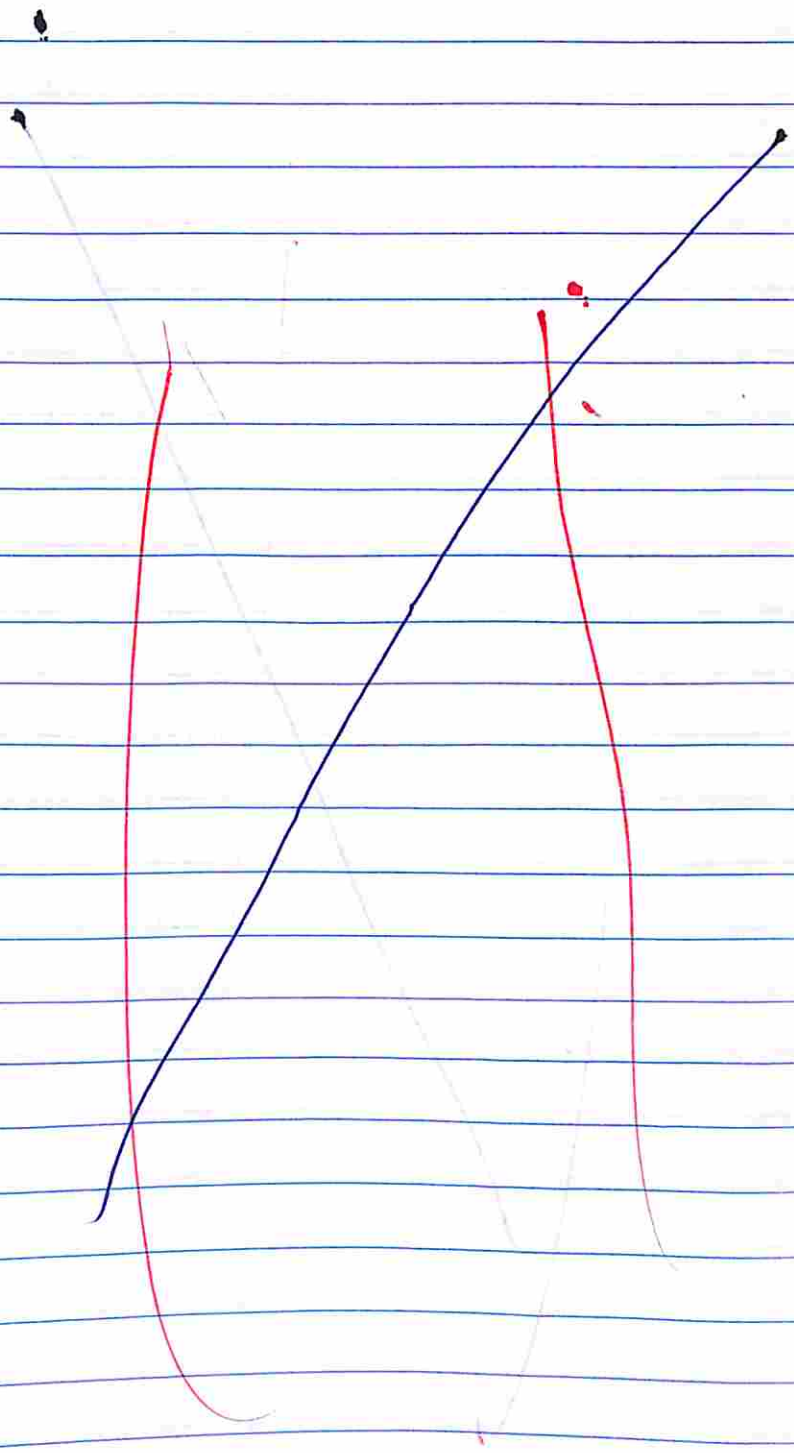

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

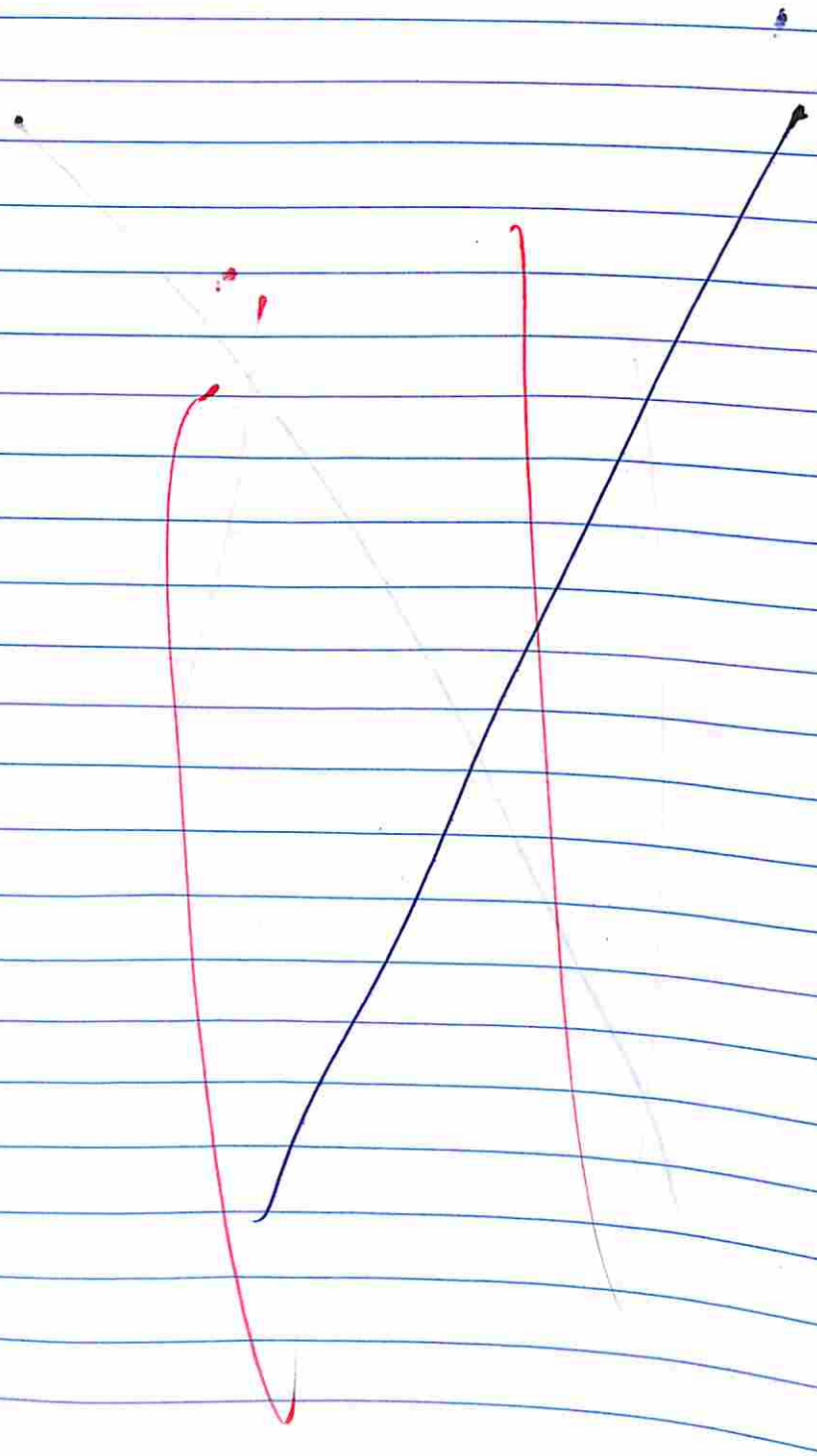

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

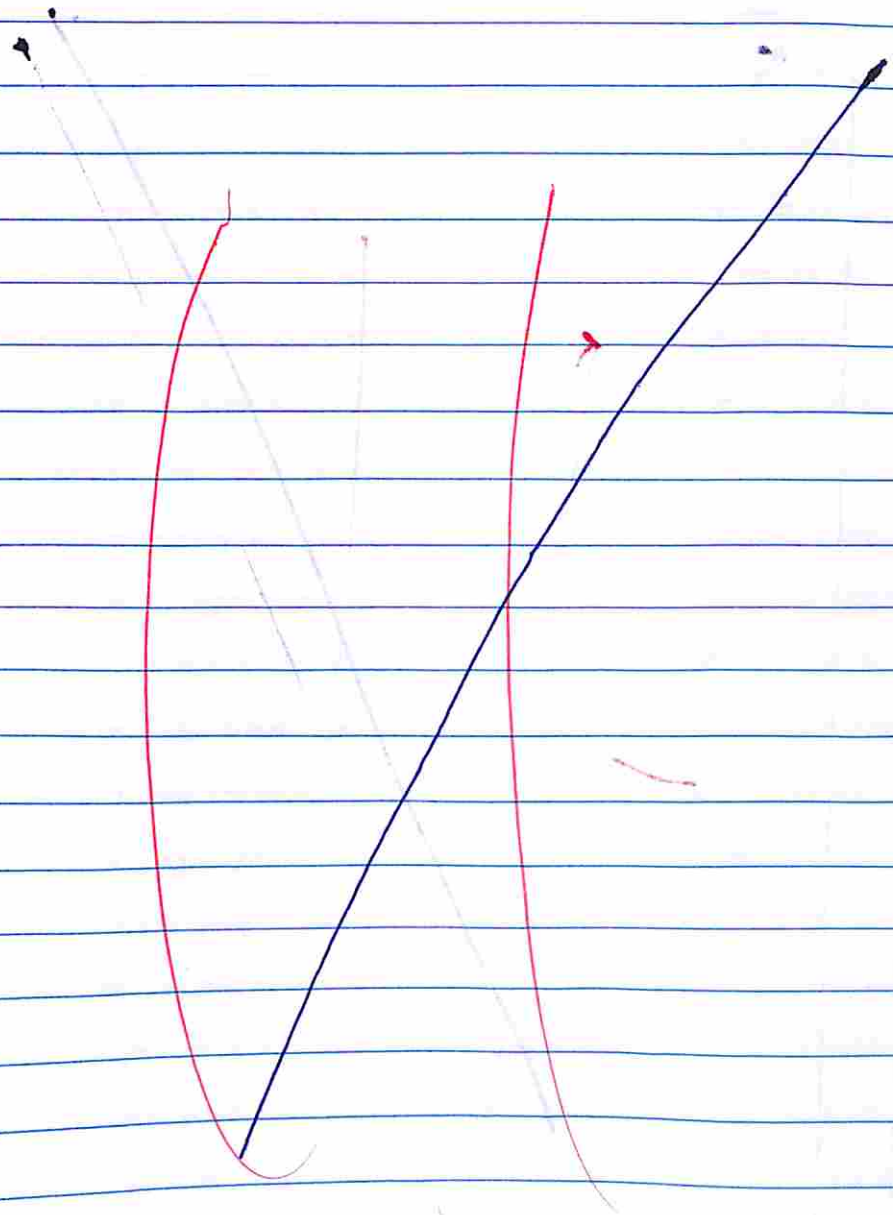

BSER-166 2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-166-2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

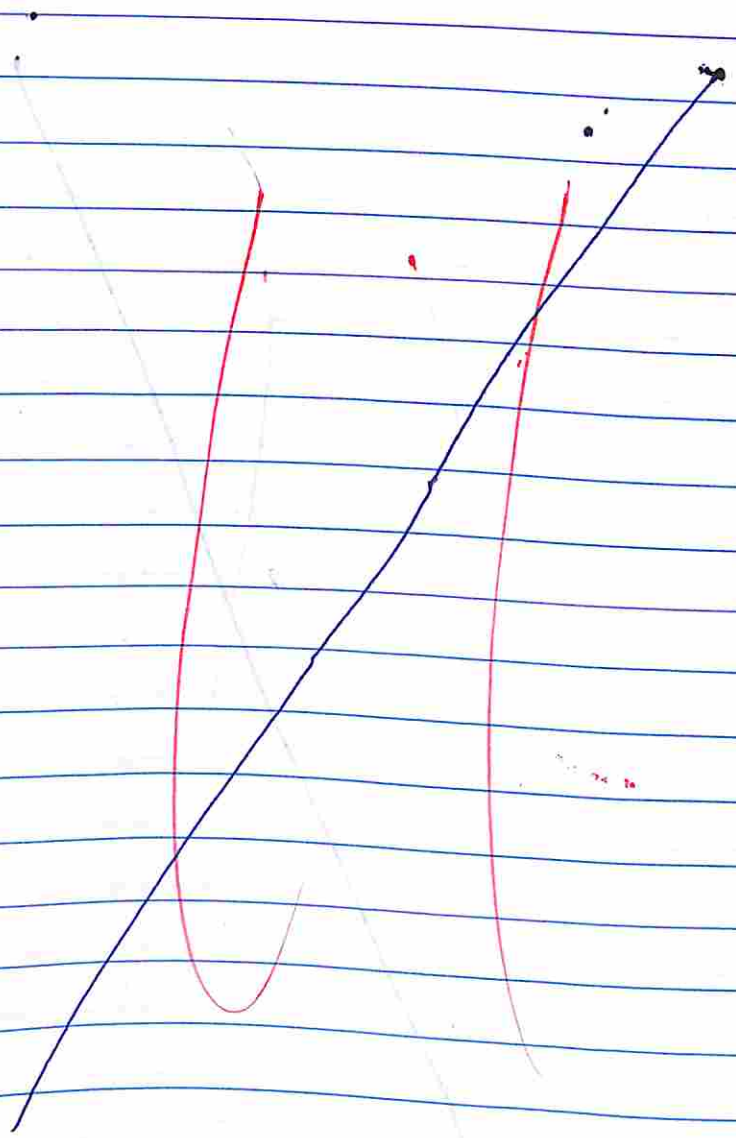

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

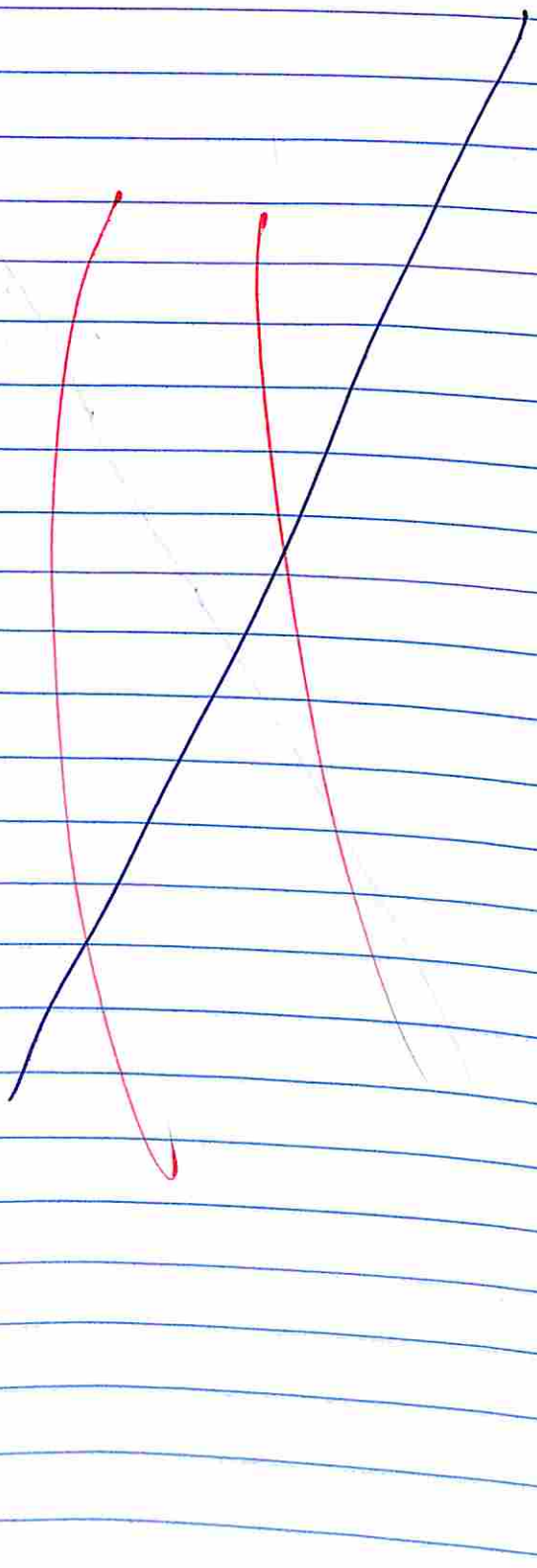

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-166/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

रफ

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | 6 | 11 | नन्दा |
| 2 | 7 | 12 | भद्रा |
| 3 | 8 | 13 | जया |
| 4 | 9 | 14 | रिक्ता |
| 5 | 10 | 15 | पूर्णा |

नीति

BSER-166/2019